

## || Rajobai Kshtarani Original Vartaji ||

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक रजो क्षत्राणी  
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं-

**भावप्रकाश**—सो रजो क्षत्राणी लीला में ललितानी की सखी है। इनको नाम रतिकला है। रति, जो—प्रीति ताकी कला। अथवा रति, जो—विहार ताकी कला, जो—जिनको श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी को विहार सिद्ध हो। यही भाव में मगन हैं। और जानत ही नहीं। श्रीस्वामिनीजी के लिये नाना प्रकार की सामग्री करनी। निकुंजादिक में रात्रि कों दुधादिक अरोगावनो। यह ललितानी की सेवा है। तातें यहां हू रजो कों यह नेम, जो—रात्र की सामग्री नित्य नेम सों श्रीआचार्यजी कों अरोगावनो। सो लीला में रतिकला कों बहोत ताप हतो। जो—श्रीस्वामिनीजी कों परोसों (ऐसो) भाग्य मेरो कब होय ? काहेतें, (जो) अरोगावनो सो ललितानी की सेवा है। सो कैसे मिले ? ललितानी तो अत्यंत प्रिय मध्याजी हैं। सगरी लीला की सिद्धि करता। सो ताप रतिकला के हृदय को है। (सो) अब श्रीआचार्यजी (श्रीस्वामिनीजी) मनोरथ पूरन करे ताप मिटाए ? काहेतें ? नारायणदास ब्रह्मचारी ब्राह्मन हते। तिनकी करी खीर श्रीगोकुलचंद्रमाजी खीर लेवे कों श्रीआचार्यजी सों कहे। तब श्रीआचार्यजी कहे, पाक कैसे लियो जाइ ? पाछे श्रीगोकुलचंद्रमाजी के ग्रन्थ (वाक्य) तें लियो।

और इहां रजो क्षत्राणी हती। ताकी अनसखड़ी आप नित्य नेम सों लेते। सो लीला संबंध को भाव विचारि के। तथा रजो एकांगी अनन्य भक्त के बस होइके, सो प्रेमके भरतें मर्यादा छूटी जाय। यामें रजो को प्रेम जताए। रजो के प्रेमतें मर्यादा स्वरूप को तिरोधान होइ जातो। लीला रस में मगन होइ सामग्री अंगीकार करें।

**वार्ता-प्रसंग १**—सो रजो नित्य पकवान सामग्री करि रात्रकों ले आवती। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन आरोगते। वाके नेम हतो।

सो एक दिन लक्ष्मन भट्ट को श्राद्ध दिन हतो। सो श्रीआचार्यजी ने ब्राह्मण भोजन कों बुलाए हते। तहां घृत थोरो सो चाहियत हतो। तब श्रीआचार्यजी ने एक वैष्णव सों कह्यो, जो—रजो के इहां ते घृत ले आवो। सो एक वैष्णव जाइ के रजो सों कह्यो, जो—श्रीआचार्यजी ने घृत मंगाया है। तब रजोने वा वैष्णव सों कह्यो, जो—घृत काहेकों मंगाया है ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो—लक्ष्मन भट्टजी को श्राद्ध दिन आज है। सो ब्राह्मण भोजन कों बुलाए हैं तहां घृत घटयो है। सो तातें मंगाया है। तब रजो ने कह्यो, जो—घृत मेरे नहीं है, जाय कहियो। तब वैष्णव फिर आयो। और श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो—महाराज ! रजो के घृत नहीं है। तब श्रीआचार्यजी कहे। जो—एकबार तू फेरि जा। खीजि के कहियो जो घृत दे। तब वह वैष्णव फेरि आयो। रजो सों कह्यो, जो श्रीआचार्यजी खीझत हैं। तातें घी देउ। तोहू रजो ने घृत दीनो नहीं। कह्यो, मेरे घृत नहीं है, कहां ते देऊ ? तब वैष्णव फिर आय श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो—महाराज ! रजो घृत नहीं देत। पाछे और ठौरतें घी मंगाइ काम चलायो। पाछे रात्र भई। तब रजो सामग्री सिद्धि करि श्रीआचार्यजी के पास आई। तब श्रीआचार्यजी पीठि दे बैठे। तब रजोने कह्यो, जो—महाराज, जीव तो दोष ते भयो है। अपराध कहा, जो—आप दरसन नाही देत ? तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो—आज लक्ष्मण भट्टजी को श्राद्ध हतो। सो तेने घृत क्यों नहीं दीनो ? तब रजोने कही, मेरे घी नहीं हतो। तब श्रीआचार्यजी ने कही, सामग्री कहाँ ते करि लाई ? तब रजो ने कही, महाराज ! आपु के घर में हू घी हतो क्यों नहीं लियो ? तब श्रीआचार्यजी

कहे, उह तो श्रीठाकुरजी को हतो। वामें ते कैसे लियो जाई ? तब रजो ने कही, मेरे घर में कौन है ? श्रीठाकुरजी तें अधिक आपको स्वरूप है। सो आपकी लीला—संबंधी सामग्री में तें श्राद्ध में कैसे देऊ ? और मैं लक्ष्मन भट्टकी लोंडी नहीं हों। मैं तो आपकी लोंडी हों, आप मेरी परीक्षा लेन अर्थ घी मंगाया। सो पहले वैष्णव पढायो तब तो लौकिक आवेस सों घी घटयो। तब आपु कहे, रजो सों ले आवो। यह लौकिक प्रवाह आज्ञा जानि के मैंने घी की नहीं करी। सो पाछें आपु यह मनमें विचारि, जो—श्राद्ध के लिये ब्राह्मण भोजन में वेगे चाहिये। फेरि जो उह वैष्णव आईकें कह्यो, जो—खीजि के कहे घी देहू। तब मैं मर्यादा जानी। जो—पुष्टि कार्य में क्रोध को प्रयोजन है नहीं। काहेतें, भावही सों सगरी वस्तु सिद्ध है। और मर्यादा में तो वेउ—वस्तु बिना कर्मको नास होई। (वस्तु तें) पूरनता है। तातें वस्तु के लिये क्रोध है। जो—यह वस्तु आवश्यक चाहिये। तातें मर्यादा की आज्ञा हु नहीं माने। और मर्यादा के कार्यार्थ घी हू नहीं दियो। पाछें तीसरे पुष्टि के आवेस ते मांगते तो मैं घी देती। और आपको घी मंगावनो हतो। (तो) इतनो उह वैष्णव सों कहि देते, जो—रजो सों कहियो। तेरे पुष्टि—धर्म में हानि नहीं है, घी दीजो। तो मैं काहे कों फेरती ? और महाराज ! जानि बूझि के कूआ मैं कैसे परू ? आपु की कृपा तें इतनो ज्ञान भयो तब मैं घी नहीं दियो। आपु तो बुद्धि प्रेरक हो। मेरे हृदय में बैठि के घी देवे की नहीं कहे। उहां के घी मंगाये। सो मैं बिना मोल की दासी हों। आपु कृपा करिये।

**भावप्रकाश**—याही तें शिक्षापत्र में कह्यो है। श्रीठाकुरजी की आज्ञा तीन प्रकार की है। लौकिक आज्ञा प्रवाहसे के करन अर्थ। याही तें श्रीभागवत में लौकिक आदि कार्य यह तीन ही बरनन हैं। अलौकिक कार्य में श्रीठाकुरजी को आश्रय और भगवदीय को संग। वैदिक कार्य में तीर्थ देव—पूजा कर्मादि। लौकिक में कुटुंब पालनों खानपान सरीर को सुख। सो तीनों फलहू न्यारे न्यारे कहें हैं। लौकिक तें संसार। वैदिक तें स्वर्गादिका। अलौकिक तें भगवद् प्राप्ति। या प्रकार के भेद सों घी नहीं दियो।

तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के दरसन दिये। तब रजो ने सामग्री श्रीआचार्यजी के आगे राखी। और कह्यो, जो अरोगो। तब श्रीआचार्यजी ने रजो सों कह्यो, जो—आजु श्राद्ध दिन है। सो दूसरी बेर लेनो नहीं। तब रजो ने कह्यो, जो—महाराज ! घर की होइ सो लोगन के मर्यादा के लिये मति लेहू। यह तो लियो चाहिये।

**भावप्रकाश**—ताको अर्थ यह, जो—लीला के भाव सों अपने निज स्वरूप सों अरोगे। अब मर्यादा को आवेस कहां राखोगे ? लीला के आवेस में मन दीजे। भक्तन को मनोरथ पूरन करो। इतनो सुनत ही आप (मैं) पुष्टिलीला को आवेस हे गयो। मर्यादा की आज्ञा सब जात रही। सामग्री अरोगे। जैसे परमानंदजी गये, “हरि तेरी लीला की सुधि आवे।” इतनो सुनत ही तीन दिन लों सरीर को अनुसंधान न रह्यो। ऐसे लीला में आवेस होइ, रजो को मनोरथ पूरन किये। तातें रजो एकांगी भगवदीय है।

तब रजो के आग्रह तें श्रीआचार्यजी ताहू दिन सामग्री अरोगे। सो वह रजो क्षत्राणी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही। तातें इनकी वार्ता को पार नहीं ! सो कहां तांई कहिये ॥

वार्ता ॥५॥

\* \* \*



## || Rajobai Kshtarani Play ||

### Director's Log

Characters:	Shri Vallabh Rajobai Ek Vaishnav 10 Brahmins 5 Vaishnavs Narrator One Narrator Two Narrator Three
Total Number of Characters:	<b>21</b> approx (More Brahmins and Vaishnav Characters can be added or removed to increase or decrease this number)
Total Number of Acts:	<b>2</b>

## PLAY BEGINS

### **Narrator One:**

Jai Shri Krishna to all our beloved fellow vaishnavas.

Today as we gather here to celebrate the birth of our beloved guru Shri Vallabhacharya Ji, what better way to celebrate this divine occasion than to enact a play on his beloved 84 Vaishnavs.

84 Vaishnavas were pushtimargiya vaishnavs initiated into the pushti fold via Shri Vallabh himself.

We students of \_\_\_\_\_ (organisation name) today humbly bow down in the lotus feet of Shri Vallabh and seek his blessings before commencing this play.

We remember our Vallabhkul Guru, our parents and all fellow vaishnavs and seek their blessings before we embark on this journey in time and devotion.

Our humble Jai Shri Krishna to our 252 & 84 Vaishnavs, all the vaishnav samaj there forth.

Let us understand the concept of leela. What is leela?

Leela is Shri Thakorji's daily activities that are going on continuously as we speak.

It is believed every Vaishnav has a name in Leela and has some activity set for him/her in Leela.

About Rajobai Kshtarani -

Rajobai is one of the 84 vaishnavs who were initiated into pushtimarg by Shri Vallabhacharya Ji.

Known by the name of Ratikala in Thakorji's leela.

Ratikala is assigned the activity of preparing offerings for Shri Swaminiji (Shri Radhaji) in Leela.

Ratikala always desired to actually serve food to Shri Swaminiji.

However that activity of serving food has already been assigned to Shri Lalitaji.

In order to fulfil this wish of serving food to Shri Swaminiji she reincarnated in this world as Rajobai Kshtarani and she got to serve food to Shri Vallabhacharya Ji.

Shri Vallabhacharya Ji is Shri Swaminiji herself. Rajobai Kshtarani would serve dinner to Shri Vallabhacharya Ji everyday with a lot of care and devotion.

Let us learn more about Rajobai Kshtarani through the play that follows.



## ACT 1

Characters:	Shri Vallabh Rajobai Ek Vaishnav 10 Brahmins 5 Vaishnavs Narrator Two
Stage Set Up:	Stage divided into 2 parts, left and right.  Left part of the stage is Shri Vallabh's house where a feast is taking place to mark the death anniversary of his father Shri Laxman Bhattji. 10 to 20 Brahmins are sitting in row to have the feast. 10 to 20 Vaishnavs are standing watching. Shri Vallabh is present.  Right part of the stage is Shri Rajobai Kshtarani's house where she is doing house work.

### ACT 1 CURTAINS RAISED

#### **Narrator Two:**

Several Brahmins have gathered at Shri Vallabh's house to attend the lunch provided in memory Shri Vallabh's father Shri Laxman Bhattji. In order to mark Shri Laxman Bhattji's death anniversary. However it is noticed that Ghee is in shortage. More Ghee would be required to feed all the Brahmins gathered for the lunch.

**Ek Vaishnav:**

Dandvat Kripanath, we are noticing a shortage of Ghee, what should we do next to proceed with the Lunch activities?

**Shri Vallabh:**

Go to Rajo's house and request her to give some Ghee for the Lunch activities.

**Narrator Two:**

The Vaishnav goes to Rajo's house as per Shri Vallabhs Instructions.

**Ek Vaishnav:**

Jai Shri Krishna Rajo.

**Rajobai:**

Jai Shri Krishna Vaishnav.

**Ek Vaishnav:**

Rajobai, Shri Vallabh has asked for Ghee.

**Rajobai:**

Why does Shri Vallabh ask for Ghee?

**Ek Vaishnav:**

Today is the death anniversary of Shri Laxman bhattji, several Brahmins have been invited for lunch and a shortage of Ghee has arose. That is why Shri Vallabh ask for Ghee.

**Rajobai:**

I do not have any Ghee. Please go and tell Shri Vallabh.

**Narrator Two:**

The Vaishnav returns to Shri Vallabhs and informs him.

**Ek Vaishnav:**

Maharaj, Rajo does not have any Ghee.

**Shri Vallabh:**

Go to Rajo again and ask her for Ghee, be stern this time.

**Narrator Two:**

The Vaishnav returns to Rajo.

**Ek Vaishnav:**

Rajo, Shri Acharyaji is sternly asking this time for Ghee.

**Rajobai:**

I do not have any Ghee, from where do I give?

**Narrator Two:**

Vaishnav returns to Shri Vallabh with Rajo's reply. Finally they arranged for Ghee from elsewhere and continued with the lunch activities.

## **ACT 1 CURTAINS FALL**



## **ACT 2**

Characters:	Shri Vallabh Rajobai 5 Vaishnavs standing in the Shri Vallabh's seva Narrator Three
Stage Set Up:	It is night time and Shri Vallabh is sitting under a tree, other vaishnavs are standing nearby for seva, Rajo Bai comes with Dinner, Shri Vallabh is upset with Rajo Bai so he is sitting facing opposite to Rajo Bai.

## **ACT 2 CURTAINS RAISED**

**Rajobai:**

Maharaj, we souls are filled with sins, what is my fault that you are sitting faced away from me and I am not getting your darshan?

**Shri Vallabh:**

Rajo today is Shri Laxman Bhattji's death anniversary, brahmins were invited to have lunch, why did you not part with some Ghee?

**Rajobai:**

Maharaj, I did not have Ghee.

**Shri Vallabh:**

Then how were you able to prepare this dinner today?

**Rajobai:**

Maharaj, there is abundance of Ghee in your house itself, why did you not use that Ghee?

**Shri Vallabh:**

That is Ghee here is for Shri Thakorji's seva purpose.  
How can I use that for other activities not related to Thakorjis seva?

**Rajobai:**

Maharaj, the ghee in my house is for your seva, whom I consider above Shri Thakorji.  
So how can I use the Ghee meant to prepare your dinner for other activities not related to Shri Vallabh's seva?  
I know you asked for the Ghee to test me. I have gained this knowledge and power to understand and use samagri for seva purpose by your blessing Shri Vallabh.  
You Shri Vallabh are the one sitting in my heart and imparting me with knowledge always.  
It was you who was sitting in my heart who guided me to the decision of not giving the Ghee for non seva purpose.

**Narrator Three:**

Shri Vallabh was very happy listening to this reply from Rajo Bai and turned to face her, giving her darshan. Then Rajo served dinner to Shri Vallabh

**Rajobai:**

Maharaj, kindly accept this dinner.

**Narrator Three:**

Shri Vallabh was hesitant to have dinner since it was the day to remember the ones who had passed away. Rajo requested Shri Vallabh to accept dinner in leela swaroop and not worldly swaroop. Since these restrictions do not apply in leela. Looking at Rajo's request Shri Vallabh accepts the dinner.  
Such were the blessings of Shri Vallabh on Rajobai Kshtarani. Words are not enough to describe the bhaav of her story.

**ACT 2 CURTAINS FALL**

**THE END**

